In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

१४

संस्कृत साहित्य सौरभ

हिन्दी १८८

मालतीमाधव

tional Sanskrit University (Valmiki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

१८

भवभूति-कृत

मालती-माधव

●

श्री विष्णु प्रभाकर

द्वारा

कथा-सार

●

C 9285
हि. 9CC

विष्णु प्रभाकर

द्वारा

सम्पादित

पुस्तक भेंट के निमित्त है

●

१९६२

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल
नई दिल्ली

तीसरी बार : १९६२
मूल्य
चालीस नये पैसे

मुद्रक
राष्ट्रभारती प्रेस,
दिल्ली

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

संस्कृत-साहित्य-सौरभ

हमारा संस्कृत-साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। भारतीय जीवन का शायद ही कोई ऐसा अंग हो, जिसके सम्बन्ध में मूल्यवान सामग्री का अनन्त भंडार संस्कृत-साहित्य में उपलब्ध न हो। लेकिन खेद की बात है कि संस्कृत से अपरिचित होने के कारण हिन्दी के अधिकांश पाठक उससे अनभिज्ञ हैं। उनमें जिज्ञासा है कि वे उस साहित्य से परिचय प्राप्त करें, परन्तु उसका रस वे हिन्दी के द्वारा लेना चाहते हैं।

पाठकों की इसी जिज्ञासा को देखकर संस्कृत के महाकवियों, नाटककारों आदि की प्रमुख रचनाओं को छोटी-छोटी कथाओं के रूप में हम हिन्दी में प्रस्तुत कर रहे हैं।

पुस्तकों की भाषा बहुत सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है। पाठकों की सुविधा के लिए टाइप भी मोटा लगाया गया।

इन पुस्तकों का सम्पादन हिन्दी के सुलेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने बड़े परिश्रम से किया है।

इस माला में कई पुस्तकें निकल चुकी हैं और आगे निकल रही हैं। आशा है, हिन्दी के पाठकों को इन पुस्तकों से संस्कृत-साहित्य की महान रचनाओं की कुछ-न-कुछ झांकी अवश्य मिल जायगी। पूरा रसास्वादन तो मूल ग्रंथ पढ़कर ही हो सकेगा। यदि इन पुस्तकों के अध्ययन से मूल पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा हुई तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

तीसरा संस्करण

इस माला की पुस्तकें बहुत लोकप्रिय हो रही हैं और हमें हर्ष है कि इस पुस्तक का नया संस्करण प्रकाशित हो रहा है। आशा है, भारतीय संस्कृति और साहित्य के प्रेमी पाठक इन पुस्तकों को और भी चाव से अपनावेंगे।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

भूमिका

संस्कृत के नाटककारों में यदि कोई कालिदास की बराबरी करता है तो वह भवभूति ही हैं। उन्होंने तीन रसों को लेकर तीन नाटक लिखे। 'उत्तर-राम-चरित' में उन्होंने करुण-रस का, 'महावीर-चरित' में वीर रस का और 'मालती-माधव' में शृंगार रस का स्रोत बहाया है। कालिदास यदि 'प्रसाद' गुण के लिए प्रसिद्ध हैं तो भवभति 'ध्वनि' के लिए। मधुर छंद गूंथने में तो वह अद्वितीय हैं। उनकी कविता हर दृष्टि से ऊंची श्रेणी की है, और जैसा कि उन्होंने स्वयं उस नाटक की प्रस्तावना में लिखा है, 'नाटक लिखने से उन्हें नैसर्गिक प्रेम था।'

इस नाटक की कथा बिल्कुल काल्पनिक है, पर तत्कालीन धर्मनीति, समाजनीति और राजनीति पर अच्छा प्रकाश डालती है। यह प्रेम-कहानी है, परंतु इसका प्रेम असंयत नहीं है, वरन् गंभीर और प्रौढ़ है। उसमें पवित्रता है, गंदलापन नहीं। राजा का आदर्श, प्रजा को उसकी आलोचना करने का अधिकार, स्त्रियों का तत्कालीन राजनीति में भाग लेना, आदि-आदि बातों पर कवि ने बड़ी खूबी से प्रकाश डाला है। उसका प्रकृति-वर्णन बड़ा मनोहर है।

भवभूति का जन्म दक्षिण में विदर्भ देश के पद्मपुर गांव में हुआ था। इनके दादा का नाम भट्टगोपाल, पिता का नीलकंठ, और माता का जातु-कर्णी था। यह कश्यप गोत्रीय यजुर्वेद की तैत्तरीय शाखा के पंडित थे। इनके नाटकों पर इनके पांडित्य की छाप है। लेकिन साथ ही इनमें विद्रोह का स्वर प्रमुख है। इन नाटकों का अभिनय राजसभा में न होकर उज्जयनी में, महाकाल की यात्रा के समय इकट्ठी हुई, जनता के सामने हुआ था। इन्हें राजाश्रय शायद नहीं मिला। इनके नाटकों की आलोचना से पता लगता है कि तत्कालीन विद्वानों में भी उनका आदर नहीं था। पर कुछ भी हो यह विश्व-साहित्य के एक महान नाटककार हैं और रहेंगे। पंडितों का अनुमान है कि यह आठवीं शताब्दी के शुरू में हुए थे।

—संपादक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मालती-माधव

: १ :

विदर्भ-राज के मंत्री देवरात, पद्मावती-राज के मंत्री भूरिवसु और बौद्ध-संन्यासिनी कामंदकी बचपन में देश-देश के अनेक विद्यार्थियों के साथ एक विद्यापीठ में एक संग पढ़ा करते थे। उनमें आपस में बड़ा प्यार था। भूरिवसु और देवरात में तो इतना प्यार था कि कामंदकी और उनकी मुख्य शिष्या सौदामिनी के सामने उन दोनों ने यह प्रतिज्ञा की कि यदि उनमें से किसीके एक पुत्र तथा दूसरे के पुत्री होगी तो दोनों का आपस में विवाह कर दिया जायगा। समय आने पर देवरात के माधव नाम का एक पुत्र तथा भूरिवसु के मालती नाम की एक कन्या उत्पन्न हुई। परंतु उनके पिताओं की प्रतिज्ञा के अनुसार उनका विवाह होता दिखाई नहीं दिया। कामंदकी इस बात से बड़ी चिंतित हुई। विशेषकर इसलिए कि पद्मावती के राजा का साला नंदन मालती से विवाह करना चाहता था। महाराज भी यही चाहते थे और उनके कहने पर मंत्री भूरिवसु भी इस विवाह के लिए तैयार होगये थे। ऊपर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:1

से इस प्रकार सबकुछ ठीक दिखाई देता था, परंतु अदंर से भूरिवसु अपनी प्रतिज्ञा को भूले नहीं थे। वह चाहते थे कि मालती का विवाह माधव से ही हो, और यह काम उन्होंने बचपन की अपनी सखी बौद्ध-संन्यासिनी कामंदकी को सौंप दिया था। वह मालती से बहुत प्रसन्न थी, क्योंकि वह बहुत ही योग्य, चतुर और सुंदर थी। इसलिए सबकुछ भूलकर वह इसी काम के पीछे पड़ी हुई थी। उन दिनों कुंडलपुर से माधव भी न्याय पढ़ने वहीं आये हुए थे। इस बात से लाभ उठाकर उन्होंने अपनी शिष्या अवलोकिता की सहायता से माधव और मालती में परस्पर प्रेम पैदा हो, ऐसी एक योजना बनाई।

इस योजना के अनुसार मदन-महोत्सव के अवसर पर मालती और माधव ने एक-दूसरे को देखा और दोनों एक-दूसरे की ओर खिंचे। माधव वीर और सुंदर तो थे ही, हार गूंथने में भी बड़े कुशल थे। उद्यान में घूमते-घूमते जब वह थक गये तो उन्होंने मौलसिरी के उन फूलों की, जो डाल से टूटकर गिर गये थे, एक सुंदर माला तैयार की। उसी माला को मालती की सखी लवंगिका उनसे मांगकर ले गई। बोली, "महा-भाग, धागा एक-सा होने के कारण फूलों की गूंथन-एकसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हुई है। इसलिए यह हार बहुत ही सुंदर दिखाई देता है। हमारी राजकुमारी इसे अपने कंठ में पहनने के लिए बहुत ही उत्सुक हैं।"

लवंगिका ने जब इस प्रकार अनुरोध किया तो माधव ने वह हार अपने गले से निकालकर उसे दे दिया। मालती ने वह हार मांगकर ही अपना प्रेम प्रकट नहीं किया, बल्कि उसने माधव का एक सुंदर चित्र भी बनाया। उसी चित्र को लवंगिका ने बौद्ध-विहार की दासी मंदारिका को दे दिया। बात यह थी कि माधव का सेवक कलहंस मंदारिका से प्रेम करता था। उसने मंदारिका के पास अपने स्वामी का चित्र देखा तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसे लेकर माधव के पास पहुंचा। माधव तब उद्यान में बैठे अपने बालसखा मकरंद को मालती से मिलने की कहानी सुना रहे थे। उस चित्र को देखकर उन्हें विश्वास हो गया कि मालती के मन में भी अनुराग पैदा हो गया है। इसपर मकरंद ने माधव से कहा, "जिसके लिए तुम बेचैन हो रहे हो, उस मालती का चित्र भी तुम इस चित्रपट पर उतार दो।"

माधव ने ऐसा ही किया। इसी समय कलहंस को ढूंढ़ती हुई मंदारिका वहां आ पहुंची। उसे चित्र की तलाश थी। आते ही उसने कहा, "कलहंस, तुम बड़े चोर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हो, भला तुमसे किसने कहा था कि इसे यहां ले आना। हमारा चित्रपट हमें दे दो, नहीं तो अच्छा न होगा।"

पर जब उसने उस चित्रपट पर मालती का भी चित्र देखा तो वह भी बहुत प्रसन्न हुई और तुरंत उसे लेकर लवंगिका के पास चली गई। दोपहर हो चला था। माधव भी मकरंद के साथ घर की ओर चल पड़े। मन उसका बड़ा उदास था। कुछ भी अच्छा नहीं लगता था। कोमल शरीर जैसे मुरझा गया हो। मकरंद ने सबकुछ देखा और मन-ही-मन सोचा—ऐसे अवसर पर भगवती कामंदकी के सिवा हमारी रक्षा और कौन कर सकता है।

वह केवल सोचकर ही नहीं रह गया, उसने इन सब बातों की पूरी सूचना भगवती कामंदकी को पहुंचा दी और उन्होंने मालती का हाल जानने के लिए अवलोकिता को भेजा। मालती तब लवंगिका के साथ ऊपर अटारी पर बैठी हुई माधव की ही चर्चा कर रही थी। इसी समय लवंगिका ने मंदारिका का लाया हुआ चित्रपट उसे दिखाया। उसपर अपना चित्र देखकर मालती बड़ी प्रसन्न हुई, परंतु माधव के मिलने की उसे कोई आशा नहीं थी। इसीलिए वह दुखी भी बहुत हुई। उसका जी घबराने लगा। माता-पिता की आज्ञा के बिना

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

किसीसे प्रेम करके वह अपने कुल को कैसे कलंकित कर सकती थी। माधव से प्रेम करने का यही तो अर्थ होता था। नहीं, अपने कुल का अपमान करके यह माधव को पाने की आशा नहीं करेगी...।

वह इसी प्रकार सोच-विचार में मग्न थी कि कामंदकी और अवलोकिता ने वहां प्रवेश किया। भगवती को सब बातों की सूचना मिल चुकी थी। वह बड़ी प्रसन्न थी। विवाह में मुख्य बात वर-वधू का आपस का प्रेम ही तो होता है। अंगिरा ऋषि ने भी कहा है कि जिसपर मन और नेत्रों का अनुराग हो, उसीके साथ विवाह करने में विशेष उन्नति होती है। लेकिन इन सब बातों को उन्होंने मन ही में रखा। ऊपर से वह बड़ी दुखी दिखाई दी और मालती के बारे में चिंता प्रकट करने लगी। यह बात सब जगह फैल चुकी थी कि महाराज के अनुरोध पर मंत्री भूरिवसु ने मालती का विवाह नंदन से करने का निश्चय कर लिया है। कामंदकी बोली, "न जाने क्या सोचकर भूरिवसु ने ऐसा गुणहीन वर चुना है। शायद वह राजा को प्रसन्न करना चाहते हैं।" लवंगिका ने कहा, "यदि ऐसा न होता तो बूढ़े और गंदे नंदन को अपनी बेटी देने को वह क्यों राजी हो जाते!"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

मालती को इन बातों से और भी दुःख पहुंचा। वह पुकार उठी—हाय, उसका भाग्य ही फूट गया है। उसके पिता ने महाराज को संतुष्ट करना ही उचित समझा, उसकी कोई चिंता नहीं की। यह देखकर सखी के दुःख से दुखी लवंगिका ने भगवती से सहायता की प्रार्थना की, पर वह बोलीं, "मैं यहां क्या कर सकती हूं? अपनी पुत्री पर पिता का पूर्ण अधिकार है। हां, वधू और वर अपने-आप कुछ करें तो मनचाही बात हो सकती है। पुराने ज़माने में ऐसी अनेक घटनाएं हुई हैं। अपनी इच्छा से ही विश्वामित्र की बेटी शकुंतला ने दुष्यंत से, देवलोक की अप्सरा उर्वशी ने पुरुरवा से और उज्जयिनी के राजा चंडमहासेन की बेटी वासवदत्ता ने कौशांबी के राजा उदयन से विवाह किया था, पर ऐसा करने के लिए साहस चाहिए।"

ये बातें हो ही रही थीं कि अवलोकिता बोल उठी, "भगवती, देर होगई। माधव की तबीयत बहुत खराब है। उनका समाचार लेना चाहिए।"

माधव का नाम सुनकर मालती और लवंगिका उनका परिचय जानने को उत्सुक हो उठीं। लवंगिका बोली, "माता, आप बार-बार 'माधव-माधव' कहा करती हैं। वह कौन हैं? मालूम होता है कि आप

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उन्हें बहुत प्यार करती हैं।" भगवती कामंदकी ने माधव और उनके पिता का परिचय देते हुए कहा, "मालती के पिता भूरिवसु माधव के पिता देवरात को बहुत अच्छी तरह जानते हैं। आजकल अपने बचपन के साथी मकरंद के साथ जो न्यायशास्त्र पढ़ाते हैं, वही माधव देवरात के पुत्र हैं।" यह परिचय पाकर मालती बहुत प्रसन्न हुई, लेकिन दूसरे ही क्षण उसकी आंखों में आंसू उमड़ आये—क्या वह फिर उन्हें देख सकेगी ?

: २ :

इधर मालती दुखी थी, उधर माधव के मन में टीसें उठा करती थीं, पर भगवती कामंदकी चुपचाप अपने काम में लगी हुई थी। उस दिन कृष्ण चतुर्दशी थी। शास्त्र में लिखा है कि इस दिन अपने हाथों से फूल चुनकर शंकर की पूजा की जाय तो सौभाग्य अटल रहता है। इसीलिए भगवती कामंदकी की आज्ञानुसार मालती की माता ने उसे और लवंगिका को शिवालय के पास की वाटिका में भेजा। माधव पहले से ही वहां बैठे थे। इस योजना के साथ-साथ एक और योजना वहां चल रही थी। भगवती का विचार था कि माधव के बालसखा मकरंद का विवाह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

नंदन को बहन मदयंतिका से हो जाय तो बहुत अच्छा होगा। इस काम के लिए उससे मदयंतिका की सखी बुद्धरक्षिता को नियत किया था। इसलिए उस दिन मदयंतिका भी दर्शनों के लिए शिवालय जा रही थी

मालती बड़ी उदास थी। उसे बार-बार माधव की याद आती थी। लवंगिका प्रकृति, पुष्प और पक्षियों का वर्णन करके उनका मन बहलाने लगी। भगवती कामंदकी भी साथ थी और माधव भी पास ही था। वह उन सबको देख-सुन सकता था। जब मालती फूल चुनते-चुनते थक गई तो भगवती के कहने पर वे सब बैठ गईं और भगवती उन्हें माधव की कथा सुनाने लगी कि वह मालती से प्रेम करने लगा है। उसकी दशा बराबर गिरती जा रही है। वह अपने प्राण हथेली पर लिये फिरता है। न जाने कब कैसा साहस कर बैठे इत्यादि, इत्यादि...।

ये बातें सुनकर माधव बड़ा प्रसन्न हुआ, परंतु मालती बहुत भयभीत और व्याकुल हो उठी। इसके उत्तर में लवंगिका ने कहा, "मालती की दशा भी ऐसी ही है। किसी कला में उसका जी नहीं लगता। दिन भर गाल पर हाथ धरे बैठी रहती है। जबसे माधव को देखा है, शरीर की जलन बढ़ती ही जाती है। हम लोग

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सबकुछ करती हैं। चांदनी में टंगा चंद्रहार इसे पहनाती हैं, शरीर पर कदलीफल से चंदन का लेप करती हैं, पर यह तड़पती रहती है। रो-रोकर कहती है, "विधाता, मैं तो मरना चाहती थी। जी कर क्या करूं ?" इसका दुःख कैसे दूर हो ? कुछ नहीं सूझता। आप ही कुछ उपाय करिये।"

मालती की ऐसी दशा है, यह जानकर भगवती कामंदकी भी बड़ी दुखी हुई; लेकिन वह कुछ उपाय सुझाती कि इतने में पास ही कहीं कोलाहल मचने लगा। उन्होंने सुना, कोई पुकार रहा था, "भागो, भागो, एक भयानक शेर एकाएक लोहे के कटघरे से निकल भागा है। कटार के समान दांतों से हड्डियां कटकटाता हुआ, गुफा-जैसा मुंह बाये वह इधर-उधर दौड़ रहा है। एक ही चपेट में मनुष्य, बैल और घोड़ों को मारकर और उनका रक्त-मांस गले में भरकर, वह अपने घोर गर्जन-तर्जन से आकाश को कंपा रहा है... भागो, भागो, अपने प्राण बचाओ।"

इसी समय बुद्धरक्षिता भी दौड़ती हुई वहां आई। वह बुरी तरह घबरा रही थी और कह रही थी, बचाओ, बचाओ। नंदन की बहन मदयंतिका शेर के पंजे में फंस गई है। जो उसे बचाने गये उन्हें भी शेर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

ने मार डाला। अब शीघ्र कोई आओ और उस बेचारी को बचाओ।"

यह समाचार पाकर मालती घबरा उठी, लेकिन माधव एकदम कुंज से बाहर निकल आये और मदयंतिका की रक्षा करने के लिए बुद्धरक्षिता के साथ चले गए। उन्हें देखकर पहले तो मालती बड़ी प्रसन्न हुई, फिर उनका मन शंका से भर उठा कि कहीं उन्हें कुछ हो न जाय। लेकिन इधर माधव शेर तक पहुंच पाते इससे पूर्व ही मकरंद ने किसी गिरे हुए मनुष्य का धनुष उठा लिया और वह उस भयानक शेर की ओर लपका। शेर भी उसपर झपटा, लेकिन मकरंद ने तुरंत उसे मार डाला। यह देखकर सब लोग 'धन्य,धन्य' कर उठे। पर इस युद्ध में उसके भी कम चोट नहीं लगी थी। कुछ क्षण तो वह तलवार के सहारे खड़ा रहा, फिर बेहोश होकर गिर पड़ा। मदयंतिका ने उसे गिरते देखा तो घबरा उठी और उसे होश में लाने का प्रयत्न करने लगी। माधव और कामंदकी आदि भी उसीकी ओर लपके, पर वहां पहुंचते-पहुंचते माधव स्वयं बेहोश होगये। अब तो सब-की-सब उनके उपचार में लग गईं। कामंदकी ने अपने कमंडल से दोनों पर जल छिड़का। शेष सब अपने आंचल से हवा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

करने लगीं। काफी देर बाद जब उन्हें होश आया तो चारों ओर हर्ष की लहर दौड़ गई। सबने एक दूसरे को पहचाना और प्रेमभरी दृष्टि से देखा। बुद्धरक्षिता ने भी उचित अवसर जानकर मदयंतिका को बताया कि वह उससे जिनकी चर्चा करती रही है, वह मकरंद यही है। माधव भी एक प्रकार से मालती से वचनबद्ध होगये, लेकिन इसी समय एक पुरुष वहां आया। उसने मदयंतिका से कहा, "बेटी, तेरे बड़े भाई नंदन ने संदेश भेजा है कि आज महाराज हमारे घर पधारे थे। उन्होंने मेरा विवाह मालती के साथ करने का निश्चय किया है। उसीके सम्बन्ध में आज आनंद उत्सव मनाने का विचार है। इसलिए तुम चलकर राजमंदिर को सजाने का प्रबंध करो।"

मदयंतिका यह सुनकर बड़ी प्रसन्न हुई, लेकिन मालती और माधव दोनों उदास हो उठे। दुःख तो औरों को भी हुआ, पर ऊपर से उन्होंने मदयंतिका को बधाई दी और वह बुद्धरक्षिता के साथ, मकरंद की ओर देखती हुई, अपने महल में चली गई। उसके जाने के बाद माधव और भी दुखी हो उठे। मालती से विवाह होने की आशा जाती रही। कार्य के आरंभ में ही विधाता उल्टे पड़ गये। मालती का दुःख अब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

वह कैसे सहेंगे ?...उसकी यह दशा देखकर भगवती कामंदकी ने उन्हें समझाया कि उन्हें अभी आशा नहीं छोड़नी चाहिए। अमात्य भूरिवसु ने महाराज से जो कुछ कहा है, उसके विषय में भी चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने मकरंद से कहा, "मैं भी इस ओर से असावधान नहीं हूं। कुछ भी क्यों न हो, मेरी जान पर ही क्यों न आ बने, मैं यही प्रयत्न करती रहूंगी कि मालती का विवाह माधव के साथ हो।"

इस प्रकार भगवती कामंदकी उन सबको समझा रही थी कि उन्हें महारानी का संदेश मिला, "मालती को लेकर अभी आओ।" वह तुरंत जाने के लिए उठी। तब मालती की मूक वेदना और भी तीव्र हो आई। वह सोचने लगी—अब जो के क्या करूं। पिता की निर्दयता तो सीमा को पार कर गई है। विधाता ने जो चाहा वही हुआ। अब मैं क्या करूं ? कहां जाऊं ? किसे दोष दूं ?

उसके जाने के बाद माधव ने निराश होकर मन-ही-मन श्मशान में महामांस बेचने का निश्चय किया और फिर मकरंद को साथ लेकर वह स्नान करने के लिए पारा और सिंधु के संगम पर चले गए।

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

: ३ :

जिस समय माधव हाथ में तलवार लेकर श्मशान में महामांस बेचने पहुंचे तो संध्या बीत चुकी थी। उसी समय भयानक रूप धरे कपालकुंडला भी वहां आई। पहले तो उसने कौतुक से माधव को देखा, फिर उधर से ध्यान हटा लिया। पास ही कराला देवी का मठ था। वहां उसका गुरु अघोरघंट मंत्रसिद्धि को पूर्ण करने के लिए, विशेष रूप से, देवी की पूजा करने जा रहा था। वह उसीके लिए सामान इकट्ठा कर रही थी। मंत्र-साधना से पहले बलि चढ़ाने के लिए एक कन्या की आवश्यकता थी। उसीको लाने के लिए वह शहर चली गई। माधव मालती को याद करते हुए वहीं घूमते रहे। इधर-उधर घूमते-फिरते पिशाचों की भीड़ के कारण श्मशान की भयंकरता और भी बढ़ गई थी। कुछ नाच रहे थे। कुछ वैसे ही शोर मचा रहे थे। माधव उन्हें पुकार-पुकारकर कहने लगे, "अरे भूत-पिशाचो, डाकनियो आओ, आओ, मैं महामांस बेच रहा हूं। यह पूजा के योग्य पुरुष का मांस है। बिना शस्त्र के काटा गया है। आओ, इसे लो।"

इसपर कोलाहल और भी बढ़ गया। उनके वीभत्स कामों से श्मशान की भयंकरता और भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

भयानक हो उठी। उनकी वेषभूषा और उनकी बात-चीत करने की रीति ऐसी डरावनी थी कि दिल दहल उठता था, फिर भी माधव की पुकार सुनकर वे सब डर गये और शीघ्र ही वहां से भाग गये। माधव भी घूमते-घूमते श्मशान के दूसरे किनारे पर पहुंच गये। तभी एकाएक उन्होंने सुना, कोई करुण स्वर में पुकार रहा था, "हाय, निर्दय पिता, जिसे भेंट देकर आप महाराज को प्रसन्न करनेवाले थे यह तुम्हारी बेटी अब मुसीबत में फंस गई है।"

माधव को लगा, जैसे यह स्वर जाना-पहचाना है। उसे सुनकर उनका दिल फटने लगा। वह कांप उठे—यही सामने तो कराला देवी का मंदिर है। हो-न-हो, यहीं से यह स्वर आ रहा है। देखना चाहिए।

वह तेजी से उधर ही चल पड़े। वहां अघोरघंट और कपालकुंडला दोनों देवी के ध्यान में मग्न बैठे थे। मालती बलिदान के सारे चिह्न धारण किये एक कोने में खड़ी थी और पुकार रही थी, "हाय मां, मालती तुमको प्राणों से अधिक प्यारी थी, पर अब क्या होगा। भगवती कामंदकी, आपको संसारी दुखों से क्या मतलब था; पर आप मुझे कितना प्यार करती रहीं। वही प्यार अब आपको सतायेगा। हाय प्यारी

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सखी लवंगिका, अब इस जन्म में तुमसे मिलना नहीं हो सकता।"

तभी माधव वहां पहुंच गये। उन्होंने देखा—कपालकुंडला और अघोरघंट देवी की आरती उतार चुके हैं। अघोरघंट अपनी अभिमंत्रित तलवार मालती के गले पर रख रहा है और कपालकुंडला उससे कह रही है, "तेरा काल आ पहुंचा है। जो कोई तेरा प्रिय हो, उसे याद करले।"

मालती माधव का स्मरण करने लगी और अघोरघंट ने तलवार उठाई कि तभी एकाएक खड्ग खींचकर माधव उनके बीच में जा कूदे। उन्होंने ललकारा, "रे दुष्ट, पीछे हट, खबरदार जो आगे पैर रखा! यदि ऐसा किया तो जीता नहीं रहेगा।"

माधव को देखकर मालती पुकार उठी, "महाराज, मुझे बचाओ, मुझे इन दोनों से बचाओ।"

माधव ने मालती को ढाढ़स बंधाया और स्वयं कापालिक से जा भिड़े। दोनों में भयंकर युद्ध छिड़ गया। कपालकुंडला अघोरघंट को उत्साहित करती थी और मालती माधव को। वे दोनों भी उन दोनों को अपनी-अपनी जय का विश्वास दिलाते थे और दूने उत्साह से एक-दूसरे पर आक्रमण करते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

इधर यह युद्ध चल रहा था उधर मालती को खोजनेवालों ने देवी के मंदिर को घेर लिया। भगवती कामंदकी ने अमात्य भूरिवसु को बता दिया था कि मालती जैसी सुंदरी कन्या को अघोरघंट के सिवा और कोई नहीं ले जा सकता। वह अवश्य उसे कराला देवी की भेट चढ़ायेगा। कपालकुंडला ने यह देखकर तुरंत अघोरघंट को सूचना दी। वह दुष्ट तनिक भी नहीं घबराया। माधव को तो डर ही क्या था। उन्होंने मालती को आये हुए आदमियों को सौंप दिया और खुले युद्ध में सबके सामने ही अघोरघंट को मार डाला। यह देखकर कपालकुंडला क्रोध से पागल हो उठी और उसने माधव को ललकारा, लेकिन माधव ने स्त्रीवध का पाप लेने से इंकार कर दिया। इसपर वह बदला लेने को और भी आतुर हो उठी।

ऐसा करने का अवसर भी उसे तुरंत मिल गया। विवाह-मंडप में जाने से पहले मालती कामंदकी की आज्ञा से नगर देवी का दर्शन करने गई। माधव तब मकरंद के साथ वहीं छिपे बैठे थे। उनके सेवक कलहंस ने उन्हें मालती के आने की सूचना दी। वह बड़े ठाठ-बाट से आ रही थी। मंगल बाजे बज रहे थे। पैरों में पैंजनी पहने हथनियों पर चढ़ी हुई, सजी-धजी गणिकाएं

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मधुर-मंगल-गान कर रही थीं। चीन देश के रंग-बिरंगे वस्त्रों को देखकर ऐसा लगता था, मानो ढेर सारे इंद्रधनुष उग आये हों; लेकिन इस सारे ऐश्वर्य के बीच कोमल वदनवाली मालती वेदना के कारण एक-दम दुबली हो गई थी। रंग उसका पीला पड़ गया था, मानों ऊपर के फूलों से लदी किसी लता को भीतर से कीड़े ने खा लिया हो।

हथिनी से उतरकर वह भगवती कामंदकी और लवंगिका के साथ मंदिर की ओर चली। तभी महा-राज के भेजे आभूषण लिये प्रतिहारी वहां आई। भगवती कामंदकी ने मालती और लवंगिका को मंदिर में भेज दिया और आप गहनों को परखने के बहाने बाहर ही ठहर गई। अंदर मालती की बुरी दशा थी। उसका हृदय स्थिर नहीं था। वह लवंगिका से बहकी-बहकी बातें कर रही थी। माधव और मकरंद भी सब कुछ देख-सुन रहे थे। वे भी उसके दुःख से बड़े दुखी हुए और जब मालती आत्महत्या की आज्ञा मांगने के लिए लवंगिका के चरणों पर गिर पड़ी तब तो प्रेम की हद होगई। इसी समय लवंगिका के संकेत पर माधव उसके स्थान पर खड़े हुए। मालती बार-बार प्रार्थना करने लगी, "सखि, मेरी बात मान ले, देर न कर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तू मेरी बात पर ध्यान क्यों नहीं देती ?"

उसके बार-बार ऐसा कहने पर माधव ने कहा, "जैसा तेरा मन हो, वैसा कर।"

मालती उस स्वर को न पहचान सकी। वह प्रसन्न होकर उठी और वह माला, जो उसने एक दिन माधव से मंगवाई थी, लवंगिका के गले में पहनाने चली; पर जैसे ही दृष्टि उठाई, उसने माधव को पहचान लिया। एकदम कांपकर पीछे हट गई। बदन से पसीना छूटने लगा। मुंह से निकला, "अरे लवंगिका ने मुझे बड़ा धोखा दिया।"

तभी कलहंस और भगवती कामंदकी आदि सब लोग वहां आगये और बड़े स्नेह से आंखों में आंसू भर-कर भगवती ने माधव से कहा, "पुत्र, सारे मांडलिक राजा जिसके चरणों में मस्तक झुकाकर धन्य होते हैं उसी प्रधानमंत्री भूरिवसु की यह इकलौती पुत्री मालती मैं तुम्हें सौंपती हूं।"

फिर मकरंद से बोली, "लो, यह आभूषण पहन-कर तुम मालती बन जाओ और पूर्व-योजना के अनुसार मेरे साथ चलकर नंदन से विवाह करा लो।"

जब मकरंद मालती का वेश धारण करके आ गया तो जाने से पूर्व मालती-माधव से कहा, "इस मठ

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

के पिछवाड़े एक बगीचा है। गुप्त द्वार से निकलकर तुम उसीमें चले जाओ। अवलोकिता ब्याह का सब सामान लिये बैठी है। वहीं तुम्हारा ब्याह होगा और जबतक मदयंतिका और मकरंद न आ जायं, तबतक वहीं ठहरना।"

: ४ :

मालती वेशधारी मकरंद की शादी नंदन से ठीक-ठीक होगई। किसीको कुछ पता नहीं लगा, परंतु मकरंद ने उसे पास नहीं आने दिया। जब उसने बल-प्रयोग करना चाहा तो एक ऐसी लात जमाई कि वर महाशय रो पड़े। फिर गालियां देते हुए वहां से भाग गये। मदयंतिका को जब इस बात का पता लगा तो उसे बड़ा दुःख हुआ और मालती को समझाने के लिए वह उसके पास आई। वह मालती को ही अपराधी समझती थी, पर लवंगिका और बुद्धरक्षिता ने उसे ऐसी पट्टी पढ़ाई कि वह अपने भाई को दोषी मानने लगी। फिर भी उसने कहा, "मेरे भाई ने जो कड़ी बात कही, वह भी बेसिर-पैर की नहीं है। सारे शहर में मालती-माधव के प्रेम की चर्चा हो रही है।"

इसपर बात आगे बढ़ी और उस चर्चा में मकरंद का नाम भी आगया। मदयंतिका धीरे-धीरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सबकुछ भूलकर मकरंद की याद में आत्म-विभोर हो उठी और मन की सब बातें कह बैठी। उसने यहां-तक कह दिया, "जबसे उस वीर ने अपने प्राण संकट में डालकर मुझे शेर के पंजे से छुड़ाया है, तबसे मैं उनकी हो चुकी हूं।"

इसी समय बाहर नौबत बजने लगी। मदयंतिका घबरा उठी, "अरे, क्या आधी रात हो गई। मैं अब जाती हूं और भैया को समझाती हूं कि वह मालती को मना ले।"

लेकिन जैसे ही वह उठी, मकरंद ने अपने-आपको प्रकट कर दिया। एक बार तो मदयंतिका घबरा गई, फिर उसे बड़ी खुशी हुई और वह उसके साथ खिड़की के रास्ते वहीं चली गई, जहां मालती और माधव थे।

उधर मालती-माधव अवलोकिता के साथ उन्हीं की चर्चा कर रहे थे। इसी समय उन्होंने किसीके आने की आवाज सुनी। शीघ्र ही बुद्धरक्षिता, लवंगिका, मदयंतिका और कलहंस ने घबराये हुए वहां प्रवेश किया। उन्होंने माधव से कहा, "महाराज, अपने मित्र की रक्षा करो। यहां से कुछ दूर पर वह पहरेदारों के साथ अकेले युद्ध कर रहे हैं। जल्दी जाकर उनकी सहायता करो।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

कलहंस बोला, "पहरेदार यदि थोड़े होते तो चिंता करने की कोई बात नहीं थी, परंतु हमारे इधर आते ही उन लोगों का बड़ा शोर सुन पड़ा। ऐसा लगता है कि उन लोगों की सहायता के लिए और बहुत-से लोग आगये हैं।"

माधव ने शांति से उसकी बातें सुनी। उन्होंने मदयंतिका का स्वागत किया और कहा, "यहां अच्छी तरह बैठो। मकरंद अकेले हैं, इस बात से तुम तनिक भी न घबराओ। उनके सामने कितने ही पुरुष क्यों न आवें, वे उनका बाल बांका भी नहीं कर सकते। फिर भी मेरे जाने में कुछ देर नहीं है।"

यह कहकर वह कलहंस के साथ चले गए। उनके जाने के बाद मालती ने बुद्धरक्षिता और अवलोकिता को कामंदकी के पास भेज दिया। फिर लवंगिका को माधव के पास जाने को कहा, "बहन लवंगिका, आर्यपुत्र से मेरी ओर से हाथ जोड़कर प्रार्थना करना कि वह जो मुझपर दया करते हैं, तो बहुत समझ-बूझकर युद्ध करें।"

उन सबके जाने के बाद भी उसकी चिंता कम नहीं हुई। मदयंतिका को छोड़कर वह बाहर जाकर लवंगिका की राह देखने लगी। वह कुछ ही दूर गई होगी कि एकाएक कपालकुंडला ने उसे ललकारा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वह घबराकर चिल्ला उठी, पर वहां उसकी पुकार सुननेवाला कौन था ? कपालकुंडला बोली, "अब बता मेरे गुरु को मारनेवाला वह तेरा माधव कहां है ? आज मैं तुझे खूब मजा चखाऊंगी। चल तो ज़रा, फिर देखना, तुझे कैसा तिल-तिल काटकर हलाल करती हूं।"

इस तरह धमकाती हुई कपालकुंडला मालती को लेकर चली गई। तभी मदयंतिका उसे पुकारती हुई वहां आई। लेकिन मालती अब वहां कहां थी ! लौटती हुई लवंगिका ही उसे मिली। उसने बताया कि महाराज को सब बातों का पता लग गया है। वह बड़े क्रुद्ध हो रहे हैं। उन्होंने स्वयं सैनिकों को भेजा है और आप महल से उनका युद्ध देख रहे हैं। उधर नगर के लोग माधव और मकरंद का नाम ले-लेकर रो रहे हैं।

यह सुनकर मदयंतिका बड़ी दुखी हुई और फिर वे दोनों इधर-उधर मालती को ढूंढ़ने लगीं। उधर माधव और मकरंद ने महाराज के सैनिकों को ज़रा-सी देर में मार भगाया। महाराज उनका युद्ध-कौशल देखकर बड़े प्रसन्न हुए। जब वे दोनों उसके पास गये तो वे बड़े प्यार से उन्हें देखने लगे और जब उन्हें उनका परिचय मिला तब तो उन्होंने दोनों का बड़ा आदर किया। मंत्री से बोले, "कहिये, ऐसे सुंदर और गुणवान मह-

lepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

मानों को पाकर आपकी इच्छा पूरी हुई या नहीं।"

इस प्रकार आदर पाकर महाराज की सज्जनता को सराहते हुए वे दोनों वहां लौटे जहां मालती आदि को छोड़ गये थे। लेकिन वहां कोई भी नहीं था। उन्होंने सोचा कि शायद वे इधर-उधर चली गई हैं। इसलिए वे उन्हें खोजते हुए आगे बढ़े। तभी मदयंतिका और लवंगिका भी उधर आगईं, लेकिन मालती का किसीको पता नहीं लगा। मकरंद को छोड़कर वे सब घबराने लगे। मकरंद ने कहा, "बिना जाने-पूछे इस तरह नहीं घबराना चाहिए। हो सकता है, वह भगवती कामंदकी के पास चली गई हो।"

वे उधर ही चल पड़े।

: ५ :

भगवती कामंदकी की एक और शिष्या थी सौदामिनी। वह उनकी सखी के समान थी और श्री पर्वत पर रहती थी। जब वह पद्मावती आई तो माधव घर-बार छोड़कर मकरंद के साथ मालती को खोजते हुए पहाड़ों की घाटियों, कंदराओं और गहन वनों में मारे-मारे फिर रहे थे। उन्हींको समझाने के लिए वह उन्हें इधर-उधर खोजने लगी। उसी वन के दूसरे भाग में माधव ठंडी सांसें भरते हुए घूम रहे थे। मकरंद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

उनका मन बहलाने के लिए कभी सुंदर हंसों की ओर उनका ध्यान खींचता था, कभी कुंज, लता, नदी और वनश्री की शोभा का वर्णन करता था, पर माधव का दुःख बढ़ता ही जाता था, यहांतक कि वह रोते-रोते बेसुध होगये। अब तो मकरंद का हृदय भी फटने लगा। वह उनकी देह पर हाथ फेर-फेरकर रोने लगा। परंतु वर्षा आ जाने के कारण माधव की मूर्छा दूर होगई और वह फिर मालती को संदेशा भेजने के लिए बिजली और बादलों के पीछे पागलों की तरह दौड़ने लगे। फिर पर्वत और वन के जीव-जंतुओं से पूछने लगे कि क्या उन्होंने कहीं मालती को देखा है। लेकिन किसीने उनकी बात नहीं सुनी। तब उन्हें होश आया—मैं भी कैसा पागल हूं, जो इस वनचर से इस प्रकार बातें करने लगा जिस प्रकार मुझे मकरंद से करनी चाहिए थीं। कहां यह पशु, कहां वह सहृदय !

बस वह मकरंद की ऐसी याद करने लगे जैसे वह कहीं दूर हो, पर वह तो पास ही था। सामने आकर बोला, "भाई, तुम्हारे जन्म का साथी अभागा मकरंद तो आपके पास ही है।

उसे गले लगाकर माधव फिर मूर्छित होगये। मकरंद ने उन्हें होश में लाने के बड़े प्रयत्न किये, पर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जब वह नहीं जागे तो रोता-कलपता वह भी पाटला-वती नदी में कूदकर मरने को तैयार होगया। तभी सौदामिनी ने उसे पकड़ लिया और वकुलमाला दिखा-कर विश्वास दिलाया कि मालती जीवित है। वहां से वह शीघ्र माधव के पास लौटे। उनकी मूर्छा टूट चुकी थी और उसके लिए वह हाथ जोड़कर वायु को धन्य-वाद दे रहे थे। तभी सौदामिनी ने उनकी अंजलि में वकुलमाला डाल दी। उसे देखकर वह अचरज, हर्ष और उन्माद से कांप उठे और उन्होंने समझा कि मालती कहीं पास ही है। वह उसको ढूंढ़ने लगे। जब वह वहां नहीं मिली तो उन्हें फिर मूर्छा आने लगी, पर तभी सौदामिनी ने आगे बढ़कर उन्हें मालती के जीवित होने का समाचार सुनाया। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे माधव के अघोरघंट का वध करने के बाद...

अघोरघंट का नाम सुनते ही माधव सब-कुछ समझ गये कि कपालकुंडला ने मालती को चुराकर उनसे बदला लेने का अपना प्रण पूरा किया है। उन्हें बड़ा दुःख हुआ, पर सौदामिनी ने कहा, "मैंने उसका सब काम बिगाड़ दिया है। तुम दुखी मत होओ।" और वह माधव को लेकर आकाश-मार्ग से वहां से चली गई।

सौदामिनी ने अपना परिचय नहीं दिया था, इस-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

लिए मकरंद को अभी पूरी तरह विश्वास नहीं आया। वह सब समाचार सुनने के लिए भगवती कामंदकी को ढूंढ़ने चला गया। वह भी लवंगिका और मदयंतिका के साथ मालती की याद में रोती-कलपती वन में घूम रही थी। वे इतनी विकल थीं कि तीनों मरने को तैयार हो गईं। इसके लिए वे मधुमती में कूदने चलीं, पर तभी उन्होंने मकरंद का स्वर सुना और यह भी सुना कि मालती का मरना सुनकर भूरिवसु भी चिता में जलकर मरने को तैयार हैं। यही नहीं, दो क्षण बाद उन्होंने स्वयं मालती का स्वर भी सुना। वह पिता को पुकार रही थी। उस स्वर को सुनकर सब चौंक उठे और दूसरे ही क्षण उन्होंने हर्ष से विभोर होकर देखा कि मूर्छित मालती को संभाले हुए माधव आ रहे हैं। पिता की याद में मालती की बुरी दशा हो रही थी। दोनों एक-दूसरे के स्नेह के कारण प्राण देने पर तुले हुए थे। उसकी यह दशा देखकर वे सब मूर्छित होगये, लेकिन शीघ्र ही जाग उठे। मालती की मूर्छा भी खुल गई। तभी ऊपर से सौदामिनी का स्वर सुनाई दिया कि मेरे कहने पर अमात्य भूरिवसु ने आग में जलने का विचार छोड़ दिया है।

ये बातें सुनकर सब प्रसन्न हो उठे। सब एक-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

दूसरे से ललककर मिले। माधव ने सबको मालती के खो जाने की सच्ची घटना सुनाई और तभी सौदामिनी ने आकर भगवती कामंदकी को प्रणाम किया, "भगवती कामंदकी, चिरकाल की सखी और शिष्या सौदामिनी आपके चरण-कमलों में विनीत भाव से प्रणाम करती है।"

कामंदकी ने उन्हें छाती से चिपकाकर उनकी बड़ी प्रशंसा की। मालती बोली, "ये धन्य हैं। इन्होंने मां कामंदकी का पक्ष लेकर कपालकुंडला की खूब दुर्दशा की। मुझे अपने आश्रम में ले गई। बेटी की तरह मुझे ढाढ़स बंधाया। फिर मुझसे मौलसिरी की माला लेकर उसके सहारे तुम सबको मरने से बचाया...।"

सौदामिनी मन-ही-मन इस प्रशंसा से बड़ी लजाईं, पर प्रकट में उन्होंने कहा, "भगवती, पद्मावती के महाराज ने मंत्री भूरिवसु के सामने नंदन की राय से यह पत्र माधव के लिए स्वयं लिखकर भेजा है।"

देवी कामंदकी ने उस पत्र को पढ़ा। उसमें महाराज ने मकरंद और मदयंतिका तथा माधव और मालती के विवाह की स्वीकृति दी थी और उनका स्वागत किया था।

अब तो सबके मन कमल खिल उठे। सब शंकाएं दूर हो गईं। सबके मनोरथ पूरे हुए। सौदामिनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बोली, "इसमें सबसे अच्छी बात तो यह हुई कि अमात्य भूरिवसु और देवरात ने अपने बच्चों के विवाह की जो प्रतिज्ञा की थी, वह पूरी हुई।"

जब सब लोगों को इस रहस्य का पता लगा तो वे बड़े चकित और प्रसन्न हुए। भगवती कामंदकी बोली, "वत्स माधव, सबकुछ ठीक होगया। बोलो, अब और क्या चाहते हो ?"

माधव ने उत्तर दिया, "इससे बढ़कर और क्या हो सकता है, तो भी आपके प्रसाद से संत प्रसन्न हों, पापियों का अंत हो। राजा लोग धार्मिक, न्यायकारी, उपकार करनेवाले और दु:ख-दरिद्रता को दूर करके जीवन देनेवाले हों। वर्षा समय पर हो, जिससे खूब अनाज पैदा हो। बुरे चरित्र सुधर जायं, पवित्र भावों का उदय हो। सब कहीं सुराज हो और प्रजा सुखी हो।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

'संस्कृत साहित्य सौरभ' की पुस्तकें

१. कादम्बरी
२. उत्तररामचरित
३. वेणी-संहार
४. शकुंतला
५. मृच्छकटिक
६. मुद्राराक्षस
७. नलोदय
८. रघुवंश
९. नागानंद
१०. मालविकाग्निमित्र
११. स्वप्नवासवदत्ता
१२. हर्ष-चरित
१३. किरातार्जुनीय
१४. दशकुमार चरित : भाग १
१५. दशकुमार चरित : भाग २
१६. मेघदूत
१७. विक्रमोर्वशी
१८. मालतीमाधव
१९. शिशुपाल-वध
२०. बुद्ध-चरित
२१. कुमारसंभव
२२. महावीर-चरित
२३. रत्नावली
२४. पंचरात्र
२५. प्रियदर्शिका
२६. वासवदत्ता
२७. रावणवध
२८. सौंदरनंद
२९. कुंदमाला
३०. यशस्तिलक
३१. तिलकमंजरी
३२. प्रतिमा-नाटक
३३. तीन नाटक
३४. नैषध-चरित
३५. चम्पू भारत
३६. प्रतिज्ञा यौगंधरायण

मूल्य प्रत्येक का चालीस न० पै०

१८

सन्मार्ग साहित्य मण्डल

12

onal Sanskrit University, Balmeeki Campus,